सारी चीजें तो तभी खत्म हो गयी

मेरी छोटी प्रियांतरा,

हैल्लो कैसी हो ?

हमेशा तो लोग चिट्ठियां भविष्य के लिए लिखते है या फिर अपने वर्तमान के लिए लेकिन मैं अपने भूत से बात करना चाहती हूँ. मैं प्रियंतरा भारती 11 साल की हूँ और मेरी यह चिट्ठी उस प्रियंतरा के लिए जो मुझसे 6 साल छोटी थी. तो ये कहानी है मेरे सपनों की.

तुम अभी पांच साल की हो, है न? कितनी ख़ुशी की बात है की हम अपने आप से चिट्ठीयों में बाते कर रहे है. हाँ मुझे हर बात सटीक तरीके से याद नहीं है लकिन मुझे मेरी आदते तो याद है. प्यारी छोटी प्रियंतरा, जब पापा ने मुझे थपकी देकर कहा था कि सुप्रीम कोर्ट की जज ही बनना, तो तुमने तो वहीं जजमेंट शुरू कर दिया था और जब तुम्हारे अच्छे न० देखकर मम्मी कहती थी तुम पढ़ लिखकर बड़ा इंसान बनना तो तुममें उत्साह आ जाता था. कभी क्लास में डांसर तो कभी सिंगर बनना चाहती थी. दीदी कहती थी कि तुम्हें पायलट बनना है तो तुम भी कहने लगती. भईया क्रिकेटर बनेगा तो तुम भी क्रिकेटर बनना चाहती थी लेकिन हाँ, ये **सारी चीजें तो तभी खत्म हो गयी जब तुम्हारे जीभ पर चोट लग गयी और तुम्हें टेटनस की बीमारी लग गयी.** क्या तुम्हें पता है तब से लेकर अब तक तुम कन्फ्यूजड थी कि तुम्हें क्या बनना है और उस बीमारी के बाद तुम बदल गयी और हमेशा चुप चुप रहने लगी. इसके बाद तुममें बदलाव आया, मधु दीदी के वजह से. तुम खुलने लगी, हर चीज़ में भाग लेने लगी, अपनी बात रखने लगी और आत्मविश्वासी भी बन गयी. हां, शुरुआत में तुम्हें ये सबकुछ बेमन ही जबरदस्ती करना पड़ता था लेकिन अब नहीं और देखो यूँही करते करते तुम 11 साल की हो गयी यानी कि मैं जो तुमसे बात कर रही है. अब तुम हमेशा ख़ुशी से जीती हो और छोटी छोटी ही सही लेकिन अब तुम्हारे पास कई उपलब्धियां भी है. सबसे छोटी बात तो ये है कि तुम्हें पता है की तुम्हें क्या बनना है. 'हूँ', ये सीक्रेट है न? वैसे अब मैंने भी ठान लिया है कि मुझे हर मुश्किल का सामना करके बस आगे बढ़ते जाना है.

थैंक यू

तुम्हारी बड़ी प्रिययंतरा

नाम- प्रियंतरा भारती

कक्षा- 6